P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-9* ISSUE-4* December- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयी वातावरण का प्रभाव का अध्ययन

Study of the influence of school environment on the academic achievement of children of upper primary stage

Paper Submission: 12/12/2021, Date of Acceptance: 22/12/2021, Date of Publication: 23/12/2021

प्रमिला शर्मा
शोध छात्रा,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री खुशालदास
विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़,
राजस्थान, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध लेख में विद्यालयी वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन किया गया है। प्रायः यह पाया गया है कि विद्यालयी समय प्रबंधन, मूलभूत सुविधाएं, शैक्षिक एवं सहशैक्षिक क्रियाएं बालकों की शैक्षिक उपलब्धि व अध्ययन आदतों को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करती है। जो उनके शैक्षिक व मनोवैज्ञानिक विकास से अर्न्तसंबंधित है। विद्यालयी वातावरण बालकों की शैक्षिक उपलब्धि से अर्न्तसंबंधित है।

In the present research article, the relationship between school environment and academic achievement has been studied. It has often been found that school time management, basic facilities, scholastic and co-scholastic activities affect the academic achievement and study habits of children in different ways. which is closely related to their educational and psychological development. The school environment is closely related to the academic achievement of the children.

मुख्य शब्दः विद्यालयी वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि, बालक।
Keywords: School environment, academic achievement, child.

प्रस्तावना

बालक का परिवार के बाद प्रमुख स्थान विद्यालय है जहां वह अपने भविष्य को गढ़ता है। राष्ट्र निर्माण हेतु तैयार होता है। विद्यालय का सम्पूर्ण वातावरण बालक को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। विद्यालय ही वह स्थान है जिसमें बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास होता है। विद्यालयी वातावरण शिक्षा का माध्यम, खाद एवं जलवायु है। बालक अपनी अन्तरनिहित शक्तियों के विकास के आधार पर ही वह उपलब्धि प्राप्त करता है जो उसे समाज तथा राष्ट्र हेतु उपयोगी बनाता है। विद्यालयी वातावरण के प्रकाश में ही बालक का राष्ट्र के भावी नागरिक के रूप में निर्माण होता है।आधुनिक युग में विभिन्न प्रकार के विद्यालय संस्थान है। इनमें वातावरण को प्रभावी व औचित्यपूर्ण बनाने में शिक्षकों की योग्यता, विद्यालयी परिवेश, शिक्षकों का चरित्र, विद्यालय की शैक्षिक व सहशैक्षिक क्रियाएं, परीक्षा प्रणाली आदि का प्रमुख योगदान रहता है। राष्ट्र प्रत्येक विद्यालय से यह अपेक्षा करता है कि बालकों को शैक्षिक व सहशैक्षिक वातावरण उच्च कोटि का प्रदान करें ताकि उनका विकास उत्तम तरीके से हो सके। बालकों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च हो ताकि भविष्य में बालक उत्तम समाज निर्माण में सहायता प्रदान कर राष्ट्र की उन्नति में प्रभावशाली योगदान प्रदान करें।

विद्यालय वह स्थान है जहां शिक्षकों को ज्ञान प्रकाश की धुरी माना गया है, जिसके चारों और राष्ट्र निर्माण हेतु किये जा रहे समस्त प्रयास चक्कर लगाते है। शिक्षक निरन्तर बदलती हुई चुनौतियों का पूर्ण विश्वास एवं निष्ठा के साथ सामना करता हुआ देश की भावी पीढ़ी, जो शालाओं में अध्ययनरत है उन्हें अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्य का पाठ पढ़ाने हेतु प्रेरित करता है।

कोठारी कमिश्न का उल्लेखनीय विचार रहा है कि "भारत की भावी पीढ़ी का निर्माण उसकी कक्षाओं मंे हो रहा है। 21वीं सदी के भारत में यह पीढ़ी कुशल एवं संभावनाओं से परिपूर्ण मानव संसाधन का अभिन्न अंग होगी।"

विद्यालय रुपी यज्ञ शालाओं में शिक्षक अपने-2 ज्ञान व अनुभव रुपी यज्ञ सामग्री से भारत के स्वर्णिम क्रान्तियों को परिमार्जित कर उच्च कोटि के नागरिकों का निर्माण करते है। ऐसी स्वर्णिम आभा को प्रकट करते है जिसके प्रकाश में राष्ट्र उज्ज्वल आंकाक्षाओं से युक्त पथ पर अग्रसित होता है। बालक अपना अधिकांश समय विद्यालय रुपी मंदिर में व्यतीत कर जीवन संबंधी उपयोगी ज्ञानार्जन करता है। शिक्षक कुम्हार के समान बालक रुपी कच्ची मिट्टी को अपनी योग्यता, क्षमता एवं कुशलता के बल पर आदर्श आकार प्रदान करने की कोशिश करता है। बालक अपनी अर्न्तनिहित शक्तियों का विकास विद्यालयों में ही करता है अगर विद्यालयी वातावरण उत्तम व अनुकूल है तो बालक की जन्मजाति शक्तियों का विकास अपने उच्चतम शिखर तक होगा। बालक अपनी योग्यताओं के विकास के आधार पर ही उपलब्धि प्राप्त करता है। शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव को

किस तरह से समझा जा सकता है यह जानने हेतु ही शोधकर्त्री द्वारा यह शोध करने की आवश्यकता महसूस की गई।

शोधसमस्या अभिकथन

"समस्या अभिकथन समस्या समाधान के लिए प्रस्तावित प्रश्न है।"--टाउनसैण्ड

उच्च प्राथमिक स्तर के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

प्रत्येक कार्य का कोई महत्व अवश्य होता है। जिसके कारण वह कार्य रुप में परिणित होता है। बाल्यावस्था जो कि विद्यालयी अवस्था भी कही गई है में बालक अपने-2 अनुभवों के साथ विद्यालय में प्रवेश करते हैं। बालकों का मन अनुकरण व अभ्यास द्वारा नए-2 अनुभव ग्रहण करते है एवं पुराने अनुभवों में सुधार हेतु प्रयासरत रहते हैं। बालकों का मन बहुत ग्रहणशील होता है। इस प्रकार विद्यालय रुपी सामाजिक उपव्यवस्था में बालक विभिन्न प्रकार की शैक्षिक उपलब्धियों की ओर अग्रसर रहता है। विद्यालय वातावरण में विद्यालयी परिवेश, शिक्षक, शैक्षिक उपकरण, कक्षा-कक्ष, वातावरण, स्वच्छता, फर्नीचर, विभिन्न प्रकार के अधिगम अनुभवांे का समावेश होता है जिनका प्रभाव बालकों के मन-मस्तिष्क पर पड़ता है, परिणामतः बालकों की शैक्षिक उपलब्धियां प्रभावित होती है। विद्यालय में ही बालक के भौतिक, मानसिक और नैतिक पक्षों का विकास किया जाता है। बालक अपने जीवनकाल में अनेक उपलब्धियां प्राप्त करता है जिनका संबंध शैक्षिक उपलब्धियों से है, जिनके मूल में शिक्षा है। शैक्षिक उपलब्धि को मुख्य रुप से विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों के रुप में आंका जा सकता है। यह विद्यार्थियों की स्वयं की योग्यताओं, पारिवारिक, विद्यालयी वातावरण, शैक्षिक अभिप्रेरणा व शिक्षक जागरुकता से प्रभावित होती है। विद्यालय समाज का मस्तिष्क है जिसकी स्थापना का उद्देश्य बालकों को समाज व राष्ट्र निर्माण हेतु किया जाता है। बालक प्रारम्भ से ही सृजनशील है। छण्ब्ण्ण् 2005 में रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार "सृजनात्मकता और उदार आनंद बचपन की कुंजी है और नासमझ व्यस्क संसार द्वारा इसकी विकृति का खतरा है।" सृजनशीलता का गुण उचित परामर्श, वातावरण व आवश्यक सामग्री के बिना दबकर नष्ट हो जाता है। विद्यार्थी अपनी उपलब्धियों के माध्यम से अवसरों का लाभ विद्यालय परिवेश में उचित मार्गदर्शन द्वारा ही उठा सकता है। जिस विद्यालय का वातावरण अच्छा नहीं होता बालक समायोजन के अभाव में उपलब्धियों की पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाता और उनका परिश्रम, समय, धन बेकार चला जाता है।शैक्षिक विकास के बिना विद्यार्थियों में उपलब्धियों का स्तर न्यून रह जाता है जिसकी वजह से वे मानसिक व शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थ व समस्याग्रस्त बन जाते है। विद्यार्थी महत्वाकांक्षी होते है तथा अनेक प्रकार से अपनी आर्थिक, सामाजिक व मानसिक पुष्टि के लिये प्रयत्नशील रहते है। विद्यार्थी जिज्ञासु प्रवृति के होते है जिनकी पूर्ति स्वस्थ विद्यालयी वातावरण में ही हो सकती है जिनका संबंध बालक की शैक्षिक उपलब्धि से जुड़ा है। क्योंकि जिज्ञासाओं की संतुष्टि के बिना बालक का सम्पूर्ण विकास अवरूद्ध हो जाता है तथा अपने भावी जीवन में अन्य लोगों से पिछड़ जाते हैं।

उपर्युक्त कारणों को दृष्टिगत रखते हुए इस क्षेत्र में अनुसंधान की आवश्यकता महसूस की गई।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

"किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है, जिस पर सारा भावी कार्यक्रम आधारित रहता है। यदि संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव का दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारा कार्य प्रभावहीन व महत्त्वहीन हो जायेगा।"डब्ल्यू आर बर्ग

प्रस्तुत शोध में बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन से संबंधित अध्ययन इस प्रकार है:-

यादव, शर्मिला, सिंह, जेड़ी (2013) ने राजकीय एवं गैर राजकीय महाविद्यालयों में शैक्षिक वातावरण व शिक्षक मनोबल का अध्ययन किया।

अग्रवाल, श्वेता (2015) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के बालक-बालिकाओं के संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन किया।

बलवान सिंह (2018) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियांे के विद्यालयी वातावरण के शैक्षिक समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन किया।

प्रस्तुत शोध समस्या उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन है।

शोध में प्रयुक्त शब्दावली

विद्यालय

विद्यालय समाज का मस्तिष्क है। जहां नियोजित शिक्षा की प्रक्रिया चलती रहती है और बालकों में वांछित ज्ञान का विकास किया जाता है। विद्यालय एक सुधार केन्द्र है जहां गरिमामय जीवन हेतु प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

उच्च प्राथमिक विद्यालय वे विद्यालय जो राज्य विभाग तथा निजी संस्थाओं द्वारा संचालित किये जाते है जिनमें कक्षा-6 से 8 तक की कक्षाओं में शिक्षण व्यवस्था की जाती है।

विद्यालयी वातावरण विद्यालयी वातावरण से तात्पर्य विद्यालय भवन, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, शैक्षिक व सहशैक्षिक क्रियाएँ जो विद्यालय के अन्दर व बाहर सम्पन्न होती है जिससे बालक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा रहता है।

शैक्षिक उपलब्धि शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य बालक ने विद्यालय में क्या व कितना सीखा है तथा बालक के विभिन्न विषयों में ज्ञान, समझ व कौशल से है जो अंकों के रुप में परिणत होकर सामने आता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करना।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व गैरसरकारी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ प्रस्तुत शोध कार्य में संबंधित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर निम्न परिकल्पनाओं पर कार्य किया गया है:-

1. उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के मध्यमानांे में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं।
3. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
4. उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

अनुसंधान की विधि प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु संबंधित तथ्यों के संकलन हेतु शोधकर्त्री ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है, क्योंकि इस विधि से पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है।

शोध अध्ययन हेतु उपकरण प्रस्तुत शोध शोधकर्त्री ने निरीक्षण व स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया है। विद्यालयी अभिलेखों के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि हेतु स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया है।

न्यादर्श प्रस्तुत शोध कार्य में श्रीगंगानगर जिले के 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिनमें 100 विद्यार्थी सरकारी व 100 विद्यार्थी गैर सरकारी है जिनमें 50 ग्रामीण $ 50 शहरी, सरकारी विद्यार्थी व 50 ग्रामीण $ 50 शहरी गैर सरकारी विद्यार्थी शामिल है।

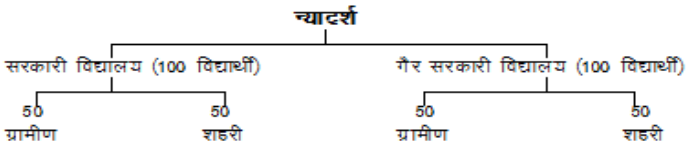

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

1. मध्यमान (Mean)
2. मानक विचलन (SD)
3. टी परीक्षण(C-Value / T-Value)
4. सहसंबंध

शोध अध्ययन के चर

स्वतंत्र चर = विद्यालयी वातावरण
आश्रित चर = शैक्षिक उपलब्धि

अध्ययन का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन को केवल राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों तक ही सीमित रखा जायेगा।
2. अध्ययन हेतु उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को ही चुना जायेगा।
3. अध्ययन हेतु उच्च प्राथमिक स्तर के 200 विद्यार्थियों, जिनमें 100 सरकारी व 100 गैर सरकारी विद्यार्थियों को चुना जायेगा।
4. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया जायेगा।
5. तथ्यों के संकलन हेतु विद्यालयी आलेखों पर आधारित स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

निष्कर्ष

1. उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयांे के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
4. उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के विद्यालयी वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
5. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयी वातावरण व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *यादव, शिव कुमार (2016) सामाजिक परिवेश व विद्यालयी परिवेश में सम्बन्ध शोधपत्र परिप्रेक्ष्यनीय।*
2. *अग्रवाल, श्वेता (2015)" उच्च माध्यमिक बालक एंव बालिका विद्यालयों के संगठनात्मक, वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।" जर्नल ऑफ एज्यूकेशन साईकोलॉजी, वॉल्यूम जुलाई, 2015*
3. *माथुर, एस. एस. (2012) शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।*
4. *राय, पारसनाथ (2013) अनुसंधान परिचय, अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा।*
5. *यादव, शर्मिला, सिंह, जे.डी. (2013) "राजस्थान के अनुदानित एवं गैर अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शैक्षिक वातावरण तथा शिक्षक मनोबल का अध्ययन" जर्नल ऑफ इंडियन एज्यूकेशन 28(4), पेज नं. 37-46, 2016*
6. *चावला, अनिता (2013) "द रिलेशनशिप बिटवीन फैमिली एनवायरमेंट एण्ड एकेडमिक एचीवमेंट", इंडियन स्ट्री रिसर्च जर्नल,1 (12), 1-4*
7. *बेस्ट, जॉन डब्ल्यू (2011) "रिसर्च इन एजुकेशन" प्रिटिंग हाल प्रा. लि. नई दिल्ली।*
8. *सिंह, सुनील (2002) 'विद्यालयी पर्यावरण तथा अधिगम' शोध पत्र रिसर्च जर्नल्स रियल्स वालः 3 छत्तीसगढ़।*
9. *सिंह, बलवान (2018) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियांे के विद्यालयी वातावरण के शैक्षिक समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन"एचेतना जर्नल्स ल्म्।* YEAR-2, VOLUME-3

***Websites** :*

www.research.com
www.shodhganga.com